

आधुनिक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस के नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता

अनुराधा धनक¹, डॉ. मेघा आर. पवार²

शोधार्थी, हिंदी विभाग, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)¹

शोध निर्देशक, हिंदी विभाग, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)²

सारांश -

गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस भारतीय संस्कृति, दर्शन, लोकजीवन एवं नैतिक चेतना का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यद्यपि इसकी रचना मध्यकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में हुई, तथापि इसमें निहित मानवीय मूल्य आज के आधुनिक समाज में भी अत्यंत प्रासंगिक दिखाई देते हैं। वर्तमान समय में भौतिकवाद, व्यक्तिवाद, पारिवारिक विघटन, सामाजिक तनाव, नैतिक संकट तथा मानवीय संवेदनाओं में कमी जैसी अनेक चुनौतियाँ दिखाई देती हैं। ऐसी परिस्थितियों में रामचरितमानस में प्रतिपादित सत्य, मर्यादा, त्याग, कर्तव्य, करुणा, सहिष्णुता, परोपकार, पारिवारिक उत्तरदायित्व तथा सामाजिक समरसता जैसे मूल्य मानव जीवन को सकारात्मक दिशा प्रदान कर सकते हैं।

यह शोध-पत्र आधुनिक सामाजिक संदर्भ में रामचरितमानस के नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि तुलसीदास की मूल्य-दृष्टि आज के बदलते सामाजिक परिवेश में किस प्रकार उपयोगी हो सकती है।

बीज शब्द - रामचरितमानस, नैतिक मूल्य, मानवीय मूल्य, आधुनिक समाज, मर्यादा, सामाजिक समरसता, तुलसीदास।

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य परंपरा में रामचरितमानस का विशिष्ट स्थान है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामकथा के माध्यम से केवल धार्मिक आख्यान प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन, सामाजिक संबंधों, पारिवारिक आदर्शों और मानवीय मूल्यों को भी अभिव्यक्त किया। राम का चरित्र मर्यादा, सत्य और कर्तव्य का प्रतीक है, जबकि सीता त्याग, धैर्य और आत्मसम्मान की प्रतीक के रूप में सामने आती हैं। भरत भ्रातृप्रेम एवं त्याग, लक्ष्मण सेवा और समर्पण तथा हनुमान भक्ति एवं कर्तव्यनिष्ठा के आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

वर्तमान समाज में तकनीकी एवं आर्थिक विकास के साथ जीवन की गति तेज हुई है, परंतु इसके साथ अनेक सामाजिक और नैतिक समस्याएँ भी उभरी हैं। परिवारों में संवाद की कमी, संबंधों में स्वार्थ, सामाजिक असहिष्णुता तथा बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने मानवीय मूल्यों को प्रभावित किया है। ऐसे समय में रामचरितमानस के मूल्यपरक पक्ष का पुनर्पाठ आवश्यक हो जाता है।

उद्देश्य

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य रामचरितमानस में अभिव्यक्त नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को वर्तमान सामाजिक संदर्भ में समझना है।

प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं—

- रामचरितमानस में निहित प्रमुख नैतिक मूल्यों की पहचान करना।

- राम के चरित्र में मर्यादा एवं कर्तव्य-बोध का अध्ययन करना।
- पारिवारिक जीवन में रामचरितमानस के मूल्यों की उपयोगिता स्पष्ट करना।
- सामाजिक समरसता और मानवीय संवेदना के संदर्भ में मानस की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।
- आधुनिक युवा पीढ़ी के लिए मानस के मूल्यबोध की उपयोगिता पर विचार करना।
- वर्तमान नैतिक संकट के समाधान में मानस की भूमिका का मूल्यांकन करना।

रामचरितमानस में नैतिक मूल्यों की अवधारणा

रामचरितमानस में नैतिकता केवल उपदेश के रूप में नहीं आती, बल्कि पात्रों के आचरण और जीवन-संघर्ष के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। सत्य, धर्म, कर्तव्य, त्याग, संयम, करुणा और परोपकार इसके प्रमुख मूल्य हैं।

राम का जीवन यह संदेश देता है कि व्यक्ति को व्यक्तिगत सुख से ऊपर अपने कर्तव्य और व्यापक सामाजिक हित को रखना चाहिए। इसी प्रकार भरत का चरित्र सत्ता-लालसा से अलग त्याग और भ्रातृप्रेम का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

आधुनिक समाज में पारिवारिक मूल्यों की प्रासंगिकता

वर्तमान समय में संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवारों की संख्या बढ़ी है। पीढ़ियों के बीच संवाद की कमी तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती आकांक्षा के कारण पारिवारिक संबंधों में तनाव उत्पन्न हो रहा है।

रामचरितमानस में माता-पिता, भाई-बहन और पति-पत्नी के संबंधों को कर्तव्य एवं संवेदना के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। राम का माता-पिता के प्रति सम्मान, भरत का राम के प्रति समर्पण और भाइयों के बीच प्रेम आधुनिक परिवारों में पारस्परिक सम्मान एवं संवाद की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

सामाजिक समरसता एवं मानवीय संवेदना

रामचरितमानस में मानव-मात्र के प्रति प्रेम और करुणा का भाव महत्वपूर्ण है। राम के चरित्र में सामाजिक संबंधों को केवल जाति या आर्थिक स्थिति के आधार पर नहीं, बल्कि मानवीयता और भावनात्मक संबंधों के आधार पर देखने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

निषादराज, केवट, शबरी और हनुमान जैसे पात्रों के साथ राम के संबंध सामाजिक समरसता और मानवीय संवेदना के विभिन्न आयामों को सामने लाते हैं। आधुनिक समाज में सामाजिक विभाजन, भेदभाव और असमानता जैसी समस्याओं के बीच यह मानवीय दृष्टि महत्वपूर्ण बन जाती है।

नारी के संदर्भ में रामचरितमानस

रामचरितमानस में स्त्री पात्रों की विविध छवियाँ दिखाई देती हैं। सीता के चरित्र में त्याग, धैर्य, आत्मसम्मान और दृढ़ता के अनेक आयाम दिखाई देते हैं। कौशल्या मातृत्व की संवेदना का प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि कैकेयी का चरित्र मानवीय मन की जटिलताओं को उद्घाटित करता है।

आधुनिक नारी विमर्श के संदर्भ में इन पात्रों का पुनर्पाठ आवश्यक है। इससे स्त्री के सामाजिक, पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक पक्षों पर गंभीर विमर्श की संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं।

युवा पीढ़ी और मानस के मूल्य

आज की युवा पीढ़ी तीव्र प्रतिस्पर्धा, तकनीकी परिवर्तन और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच जीवन व्यतीत कर रही है। ऐसे समय में रामचरितमानस के आत्मसंयम, लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता, कर्तव्यनिष्ठा और सकारात्मक जीवन-दृष्टि जैसे मूल्य युवाओं के व्यक्तित्व-विकास में सहायक हो सकते हैं।

राम, लक्ष्मण और हनुमान जैसे पात्र युवाओं को अनुशासन, परिश्रम, साहस और समर्पण की प्रेरणा देते हैं।

वर्तमान नैतिक संकट और रामचरितमानस

वर्तमान समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा, स्वार्थ, असहिष्णुता और संबंधों में अविश्वास जैसी समस्याएँ नैतिक संकट की ओर संकेत करती हैं। रामचरितमानस इन समस्याओं का कोई प्रत्यक्ष आधुनिक समाधान प्रस्तुत नहीं करता, लेकिन उसके मूल्य व्यक्ति को नैतिक निर्णय लेने की दृष्टि अवश्य प्रदान करते हैं।

मानस का मूल संदेश व्यक्ति के आचरण को सत्य, कर्तव्य और लोकमंगल से जोड़ता है। इसलिए इसका अध्ययन आधुनिक नैतिक विमर्श के लिए उपयोगी हो सकता है।

लोकतांत्रिक एवं सामाजिक संदर्भ में प्रासंगिकता

आधुनिक लोकतांत्रिक समाज समानता, न्याय, सह-अस्तित्व और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों पर आधारित है। रामचरितमानस में लोककल्याण, प्रजा के प्रति उत्तरदायित्व और आदर्श शासन की कल्पना विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

रामराज्य की अवधारणा को आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था का प्रत्यक्ष विकल्प न मानकर न्यायपूर्ण, कल्याणकारी और उत्तरदायी शासन की सांस्कृतिक कल्पना के रूप में देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

रामचरितमानस की प्रासंगिकता केवल धार्मिक या आध्यात्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। इसके नैतिक एवं मानवीय मूल्य आधुनिक सामाजिक जीवन के अनेक प्रश्नों पर विचार करने की आधारभूमि प्रदान करते हैं। सत्य, कर्तव्य, मर्यादा, त्याग, करुणा, परोपकार, पारिवारिक उत्तरदायित्व और सामाजिक समरसता जैसे मूल्य आज भी मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

हालाँकि रामचरितमानस को आधुनिक समस्याओं का सरल या प्रत्यक्ष समाधान मानना उचित नहीं होगा। इसके बजाय इसके मूल्यों का समकालीन संदर्भ में आलोचनात्मक एवं विवेकपूर्ण पुनर्पाठ आवश्यक है। विशेष रूप से शिक्षा, परिवार, युवा चेतना और सामाजिक समरसता के क्षेत्रों में इसके मूल्यबोध से सकारात्मक प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है।

अतः कहा जा सकता है कि रामचरितमानस की वास्तविक प्रासंगिकता उसके युगविशेष से आगे बढ़कर उन सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों में निहित है, जो मनुष्य को अधिक संवेदनशील, उत्तरदायी और नैतिक बनाने की प्रेरणा देते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. तुलसीदास — रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ 1-1150।
2. शुक्ल, रामचंद्र — हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृष्ठ 1-450।
3. द्विवेदी, हजारी प्रसाद — हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 1-250।
4. बुल्के, फादर कामिल — रामकथा : उत्पत्ति और विकास, हिंदी परिषद प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 1-650।
5. सिंह, नामवर — इतिहास और आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 1-220।
6. शर्मा, रामविलास — परंपरा का मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 1-300।
7. नगेन्द्र — हिंदी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ 1-600।
8. सिंह, उदयभानु — तुलसी, साहित्य भवन, इलाहाबाद, पृष्ठ 1-280।
9. वंशी, बलदेव — तुलसी साहित्य और संस्कृति, साहित्य सहकार, नई दिल्ली, पृष्ठ 1-300।
10. सिंह, बच्चन — हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 1-500।

चतुर्वेदी, सीताराम — गोस्वामी तुलसीदास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 1–350।

Cite the Article:

धनक, अनुराधा, पवार, डॉ. मेधा आर. (2026). आधुनिक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रामचरितमानस के नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता. Shiksha Samvad: International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 4(1), 331–334. DOI: - <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v4i1.38>

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.